GEOGRAPHY

Test-7

OPT^DTVF-23 **G-2307**

Time Allowed: Three Hours	Maximum Marks : 250

Name: Jatin Kumar **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** ______________________________

Center & Date: Online – 03.08.2023 **UPSC Roll No. *(If allotted)*:**

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** which are printed in **ENGLISH.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Q. No.	a	b	c	d	e	Total Marks	Q. No.	a	b	c	d	e	Total Marks
1	5	4	4.5	3.5			5	3	4.5	3.5	3.5	3	
2							6						
3							7	7	6	6.5			
4	7.5	5	4.5				8	8	5.5	6			
						Grand Total	90.5						

170136

Evaluator (Signature) Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency
2. Introduction Proficiency
3. Content Proficiency
4. Language/Flow
5. Conclusion Proficiency
6. Presentation Proficiency

---

① संदर्भ दक्षता ठीक है।

② परिचय दक्षता में सुधार का प्रयास करें।

③ विषय वस्तु की समझ और बढ़ाएं।

④ भाषा/प्रवाह ठीक है।

⑤ निष्कर्ष दक्षता के स्तर पर सुधार का प्रयास करें।

⑥ प्रस्तुति दक्षता ठीक है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

① (iii) गहिरमाथा –
- उड़ीसा में स्थित
- ओलिव रिडले कछुओं की नेस्टिंग साइट - अरिबाडा

→ उड़ीसा का राष्ट्रीय समुद्री अभयारण्य

(iv) रामप्पा मंदिर :-
- 13वीं शताब्दी में रामप्पा द्वारा बनाया
- मार्को पोलो - गैलेक्सी का चमकता सितारा कहा
- काकतीय राजवंश

→ तेलंगाना में स्थित
→ यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल

(ix) पारसनाथ पहाड़ी :-
- महादेव पहाड़ी के उत्तर पूर्व में

(x) महादेव पहाड़ी
- धूपगढ़ सबसे ऊँची चोटी
- मैकाल तक विस्तार
- मध्य भारतीय उच्च भूमि में विस्तृत

मध्य प्रदेश में सतपुड़ा पर्वतमाला का भाग

वैकल्पिक विषय के स्तर पर विवरण (संक्षिप्तता लायें)

5/20

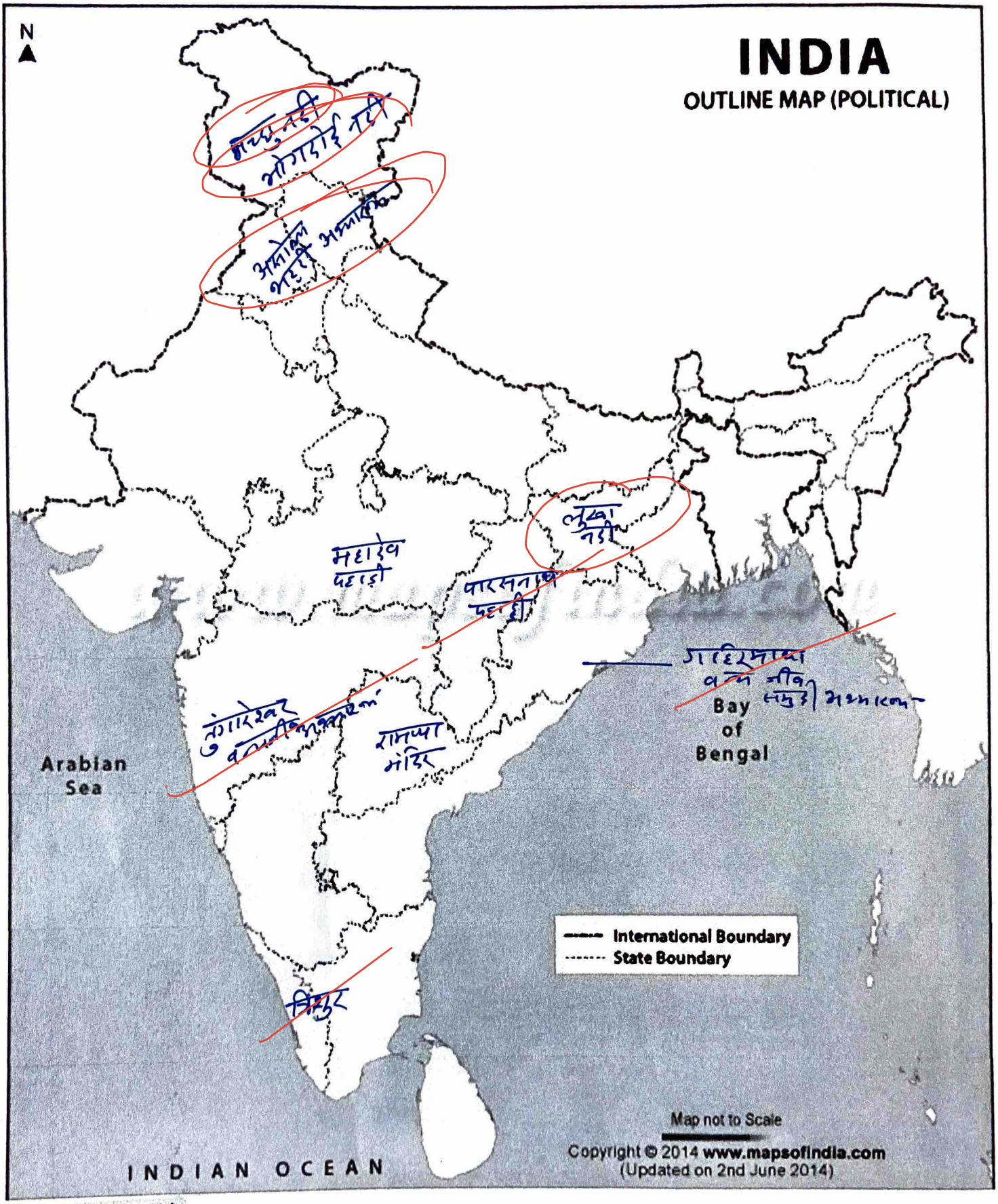

Tweet This

Disclaimer: All efforts have been made to make this image accurate. However Mapping Digiworld Pvt Ltd and its directors do not own any responsibility for the correctness or authencity of the same.

adpushup

भूगोल टेस्ट - 7 | G-2307

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

1 (b) हिमालय रक्षा अवरोधों से कहीं अधिक है। चर्चा कीजिये।

हिमालय भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित 5 लाख वर्ग किमी क्षेत्र में फैली हुई पर्वत श्रृंखला है जिसका निर्माण अल्पाइन पर्वत निर्माण हलचल के दौरान तृतीयक कल्प में हुआ।

हिमालय का महत्व :-

1. <u>मानसूनी वर्षा का संरक्षक</u> –
- भारत में मानसूनी पवनों (द.-पश्चिमी) से आने वाली आर्द्र वायु को रोकने के लिए हिमालय अवरोधक का कार्य करता है।
- मानसूनी वर्षा का लगभग सम्पूर्ण जल भारतीय मुख्य भूमि पर पड़ता है।

2. <u>तीव्र ठण्डी पवनों से रक्षा</u> – हिमालय एक कवर के रूप में साइबेरिया से आने वाली शीत पवनों को भारत में प्रवेश होने से रोकता है जिससे

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

भारतीय जलवायु अधिक ठण्डी नहीं हो पाती।

③ नदियों का स्रोत – हिमालय पहाड़ियों से अनेक नदियाँ जैसे – गंगा, यमुना आदि उद्गम करती है जो उत्तर के विशाल मैदान का निर्माण करती है।

जैवविविधता
→ उष्णकटिबंधीय से लेकर टुंड्रा तक वनस्पति
→ पर्यावरण-पर्यटन
→ खनिज स्रोत
↳ सेंधा नमक
→ चूना पत्थर

④ उत्तर पूर्वी सीमा निर्माण –

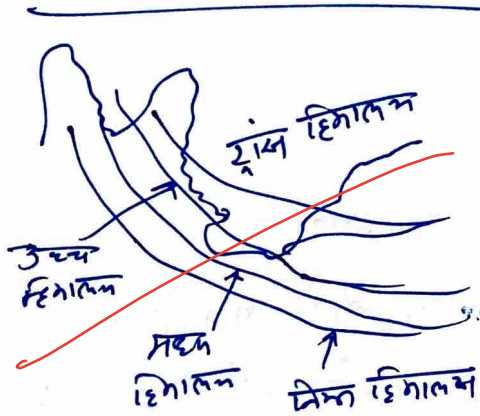

भारत में हिमालय

उत्तर पूर्वी पहाड़ियाँ जैसे गिरी, अबोर, मिशमी, पटकाई कुम, चीन एवं म्यांमार से सीमा का निर्माण करती है।

हिमालय ना केवल चीन के प्रभाव से रक्षा करता है अपितु भारतीय जलवायु पर भी प्रभाव डालता है। इसके अनेक सांस्कृतिक व ऐतिहासिक प्रभाव भी रहे हैं।

निष्कर्ष(3) समग्र बनाने

4/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

① (c) भारत की काली मिट्टी के आर्थिक महत्व पर चर्चा कीजिये।

भारत में काली मिट्टी मुख्यत: दक्कन ट्रैप वाले क्षेत्र में पायी जाती है। यह चट्टानी संरचनाओं के विघटन से निर्मित उपजाऊ मृदा होती है।

चित्र - काली मृदा

काली मिट्टी का आर्थिक महत्व

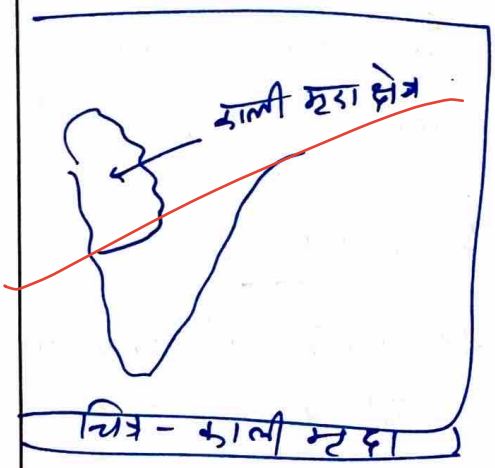

① **कृषि के लिए अधिक उपयुक्त**:-
काली मृदा में मुख्यत: कपास की खेती की जाती है। इसके अतिरिक्त कुछ जगह यहाँ गन्ना व तिलहन भी उगाये जाते हैं। इसे रेगुड़ मृदा भी कहते हैं।

फसल ! ज्वार, अलसी, तंबाकू, सूरजमुखी, बाजरा आदि

② **सिंचाई की न्यून आवश्यकता**:-
- काली मृदा पानी प्राप्त करने से संहत हो जाती है एवं पानी की कमी

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

होने पर इसमें दरारें पड़ जाती है। इस तरह इसे स्वतः जुताई वाली मृदा भी कहते हैं।

: इसमें आवश्यकता अधिक गहराई तक पहुँचती है तथा उर्वरता असाधारण होती है।

3) **पोषक तत्व से भरपूर** :- बेसाल्ट चट्टानों के विघटन से निर्मित होने के कारण इनमें फॉस्फोरस आदि तत्वों की मात्रा अधिक होती है जो फसल उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

4) **अर्थव्यवस्था में योगदान** :-
- काली मिट्टी पर किसानों की निर्भरता
- किसानों को कम कीमत वाली फसलों से इस क्षेत्र में फसल के लिए प्रोत्साहन।

काली मिट्टी किसानों के लिए ही नहीं अपितु खनिज संसाधनों की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

विषय वस्तु की समझ और बढ़ायें।

4½/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

1.

(a) भारत में पश्चिमी विक्षोभ के प्रभावों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

→ बहिरूष्ण कटिबंधीय चक्रवात
→ गैर मानसूनी वर्षा लाते हैं।

पश्चिमी विक्षोभ, सूर्य के दक्षिणायन होने पर सर्द मौसम में पश्चिमी क्षेत्रों जैसे - भूमध्यसागर से उठने वाली आर्द्र पवनें हैं जिसके कारण सर्दियों में भारतीय उपमहाद्वीप में वर्षा होती है।

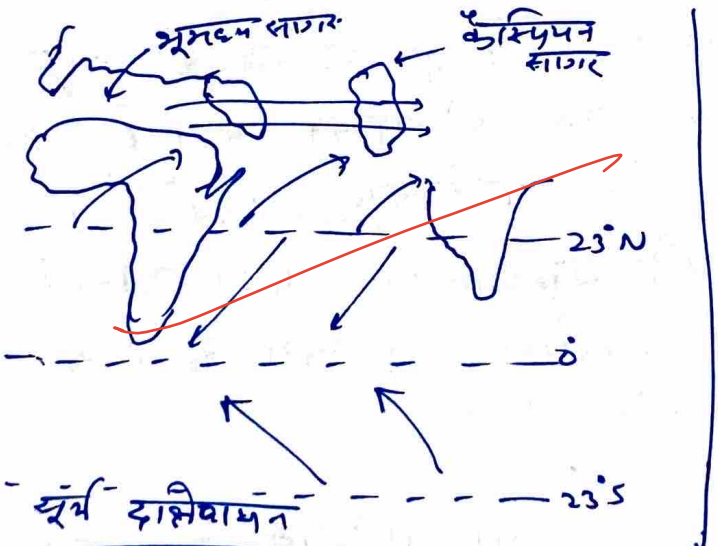

चित्र : पश्चिमी विक्षोभ

पश्चिमी विक्षोभ का भारत पर प्रभाव:-

① जलवायु पर प्रभाव :- पश्चिमी विक्षोभ के समय सर्दियों में न्यून तापमान

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

होने पर वर्षा के कारण मौसम थोड़ा सुहावना हो जाता है।

2) कृषि पर प्रभाव :- राजस्थान में इस तरह की बारिश को मावठ कहते हैं जो रबी की फसलों के लिए लाभकारी समझी जाती है। इससे सिंचाई की आवश्यकता कम हो जाती है।

3) वाटरशेड प्रबंधन व सूखे की सम्भावना कम :- सितम्बर के बाद बारिश की न्यूनता के कारण जल की मात्रा कम हो जाती है जिससे पश्चिमी क्षेत्रों में सूखे की सम्भावना पैदा होती है। पश्चिमी विक्षोभ इसे कम करने में सहायता करता है।

अतः पश्चिमी विक्षोभ अपने सकारात्मक प्रभावों से राजस्थान के पश्चिमी भागों तक में बारिश के कारण फसल उत्पादन में वृद्धि करता है।

3½/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

4

(a) वृहद भारतीय मैदान कमोबेश समतल और एक जैसे हैं; हालांकि, इनमें कुछ स्थानीय विविधताओं को भी देखा जाता है जिसके कारण अंततः मैदान का क्षेत्रीय विभाजन हुआ। उपरोक्त कथन के आलोक में, वृहद मैदानों के क्षेत्रीय विभाजनों पर चर्चा कीजिये।

वृहद भारतीय मैदान एक विस्तृत क्षेत्र में उत्तरी भारतीय भू-भाग पर फैले हुए प्रदेश हैं जिन्हें सामान्यतः उपजाऊ माना जाता है एवं ये नदी अवसादों से निर्मित क्षेत्र है।

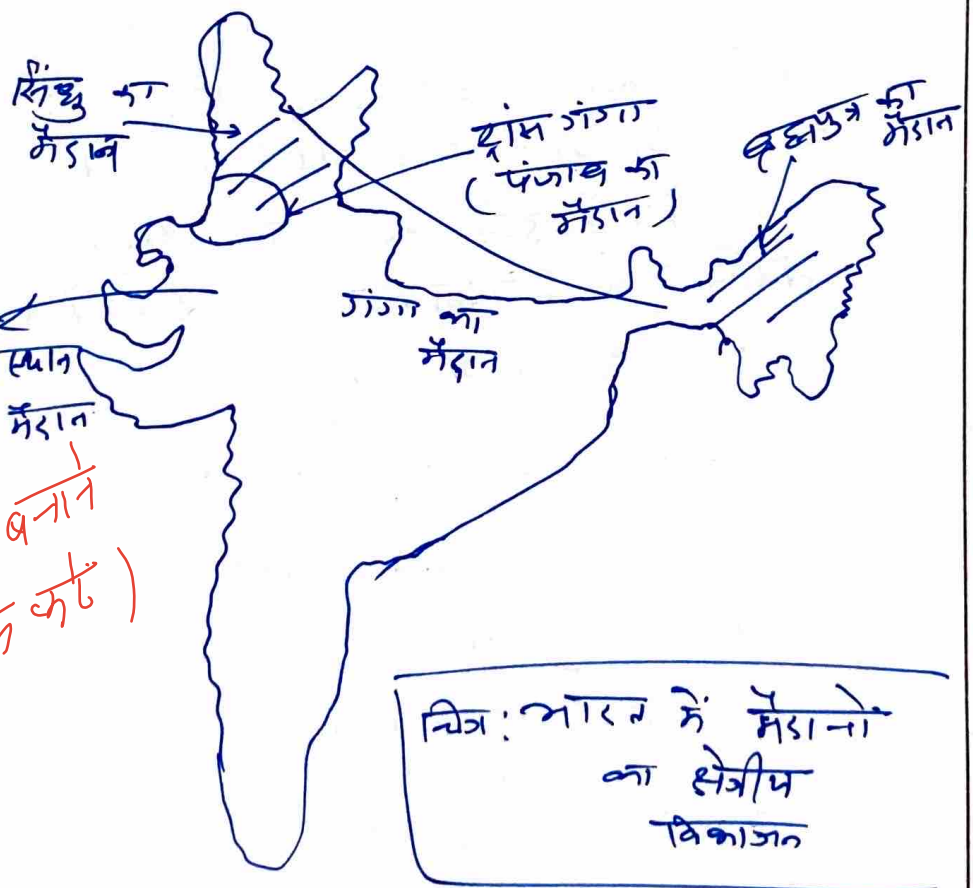

चित्र: भारत में मैदानों का क्षेत्रीय विभाजन

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

- गंगा, सिंधु व ब्रह्मपुत्र ने उत्तर व पूर्वी भारत के मैदानों का निर्माण किया है किन्तु ये मैदान अपनी मृदा, समुद्र तल से ऊंचाई, क्षेत्रीय विभेदन एवं उपजाऊपन में एक दूसरे से भिन्न हैं। इन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

(1) गंगा का मैदान :- गंगा का मैदान गंगा स्रोत से गंगोत्री से लेकर डेल्टाई क्षेत्र में पश्चिमी बंगाल एवं आगे बांग्लादेश तक विस्तृत है। यह लगभग 3.5 लाख वर्ग किमी. का क्षेत्र है इसे भी आगे निम्नलिखित तरीके से विभक्त कर सकते हैं।

(i) उच्च गंगा मैदान :-
विस्तार - उत्तराखण्ड से पश्चिमी यूपी क्षेत्र
ढाल - 25 सेमी./किमी.

(ii) मध्य गंगा मैदान :-
विस्तार - उत्तर प्रदेश एवं बिहार का पश्चिमी क्षेत्र
ढाल - 20 सेमी./किमी. किन्तु बिहार तक यह 5-10 सेमी./किमी. रह जाता है।

- पूर्व पश्चिम में लगभग 550 किमी लंबा
- सागर तल से ऊंचाई 100 से 300 मीटर

Page

(iii) निम्न गंगा मैदान :-

- विस्तार - बिहार एवं पश्चिमी बंगाल
- ढाल - 4-5 सेमी./किमी.
- यहाँ तक गंगा अत्यधिक विसर्पित हो जाती है एवं डेल्टा का निर्माण करती है - सुन्दरवन का डेल्टा

(2) ब्रह्मपुत्र का मैदान :-

- लगभग 53000 वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत
- सीमा - पारीय नदी
- माजुली द्वीप समूह
- खासिया, डफ्ला, गुवाहाटी एवं धुबरी तक विस्तृत

(3) पंजाब का मैदान :-

- विस्तार लगभग 1.7 लाख वर्ग किमी.
- गंगा द्रोणी मैदान भी कहा जाता है।
- मुख्य नदियां - रावी, व्यास व सतलज
- उपजाऊ भूमि

(4) राजस्थान का मैदान :-

- विस्तार - 1.75 लाख वर्ग किमी.
- नदियां - साबरमती, माही, लूणी आदि

(Please do not write anything except the question number is this space) कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

- अरावली पर्वत के पश्चिम में मुख्यतः मरुस्थलीय क्षेत्र एवं पूर्व में वर्षा के कारण आर्द्र व नमयुक्त जलवायु

→ हिमाचल व जम्मू कश्मीर के सिंधु व झेलम चिनाब नदियों द्वारा निर्मित मैदान है जिनमें जम्मू कश्मीर में केसर की खेती की जाती है।

अतः स्थानीय विविधताओं एवं भौगोलिक उच्चावच के कारण मैदानों का क्षेत्रीय विभाजन हुआ है किन्तु ये अधिकांश समतल ही है एवं इन पर भारत की लगभग आधी जनसंख्या की आजीविका टिकी है।

विश्लेषणात्मक समझ बढ़ायें।

मॉडल उत्तर देखें।

7½ / 20

(41)

(b) चर्चा कीजिये कि मानव जीवन, भूमि और संपत्ति को बाढ़ के प्रकोप से बचाने के लिए क्या शमन उपाय किये जा सकते हैं।

बाढ़ से आशय जल के अनियंत्रित एवं अनियमित बहाव से है जिसके मानवीय व प्राकृतिक कारण होते हैं।

बाढ़ का क्षेत्रीय वितरण :-

1. गंगा प्रदेश
2. ब्रह्मपुत्र प्रदेश
3. गोदावरी - कृष्णा - कावेरी क्षेत्र
4. सिंधु नदी क्षेत्र

बाढ़ के कारण :-

1. प्राकृतिक कारण :- प्रकृति द्वारा प्रायोजित कारण जिनसे बाढ़ सम्भावित होती है।

(i) अत्यधिक वर्षा - किसी वर्ष अत्यधिक वर्षा होने से नदियों में जल स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है जिस कारण बाढ़ की सम्भावना बढ़ जाती है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

(2) बादल फटना :-

बादल फटने के दौरान अत्यधिक मात्रा में जल प्राप्ति होती है जिससे बाढ़ की सम्भावना बढ़ती है।
जैसे - चमोली - उत्तराखण्ड

(3) नदियों में गाद जमा होना :-

→ नदी में गाद जमा होने से नदी का जल स्तर बढ़ जाता है

(4) नदी के मार्ग में परिवर्तन -

- नदी में अवसाद वहन की सीमित क्षमता के कारण नदी मार्ग में परिवर्तन हो जाता है जिससे बाढ़ आती है।

• मानव जनित कारण :-

(1) जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन -

- अधिक ताप → अधिक आर्द्रता संग्रहण → अतः अधिक बारिश

(2) अनियोजित तरीके से शहरों का निर्माण
जैसे गुरुग्राम में बाढ़

(3) सिंगल यूज प्लास्टिक/कचरे के उपयोग के कारण नालों एवं वाहिकाओं का अवरुद्ध होना

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

शमन के उपाय :-

1. नियोजित शहरीकरण की परिकल्पना
   उदा० → SMART शहर, स्वच्छ मिशन
2. नदी किनारे तटबंधों का निर्माण
3. नालियों से गाद की समय-समय पर सफाई करना
4. नदी जोड़ो कार्यक्रम
   उदा० - केन-बेतवा लिंक
5. बस्तियाँ नदी किनारों से दूर विस्थापित करना
   उदा० - आगरा, यमुना किनारे अवस्थित
6. चेक डैम व बाँधों का निर्माण
   उदा० - हीराकुण्ड डैम - महानदी पर
7. मैंग्रोव वनस्पतियों का विकास - सुरक्षा की प्रथम दीवार

बाढ़ नवीन उत्पादक पदार्थों को लेकर जमीन का उपजाऊपन भी बढ़ा देती है किन्तु बाढ़ से बचने के लिए भूमीकरण वर्किंग ग्रुप (4-20) पर कार्य करने की आवश्यकता है।

5
15

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5 (c) तापमान और वर्षा के सह-संबंध के साथ भारत में प्राकृतिक वनस्पति के वितरण पर चर्चा कीजिये।

प्राकृतिक वनस्पति का परिचय है।

तापमान में अधिकता के कारण सामान्यतः वर्षा में वृद्धि होती है।

वर्षा प्रक्रिया

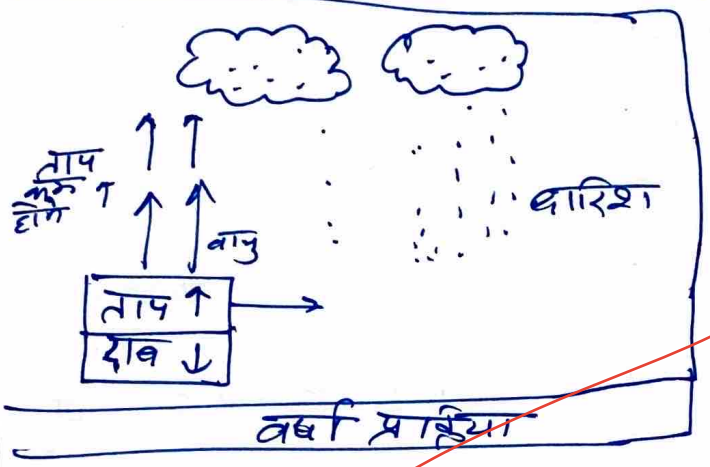

अत्यधिक कम दबाव होने पर वायु ऊपर उठती है एवं धीरे-धीरे सामान्य ताप ह्रास दर के कारण ठण्डी होती है (ताप कम)। इस तरह यह बादल का निर्माण करती है एवं अधिक भार के कारण बारिश होती है।

अनावश्यक

भारत में प्राकृतिक वनस्पति वितरण:-

- तापमान व वर्षा के आधार पर भारत में प्राकृतिक वनस्पति को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

① उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन:-

- क्षेत्र – पश्चिमी घाट का पश्चिमी हिस्सा, उत्तर पूर्वी भारत क्षेत्र, हिमालय

- वर्षा की मात्रा - 200 cm. - 250 cm.
- आर्द्रता - 70-80%
- मुख्य वनस्पति - महोगनी, आबनूस, रोजवुड

तापमान के संदर्भ में भी चर्चा करें

2. उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वनस्पति :-
- क्षेत्र :- सदाबहार वनों से लगे क्षेत्र छत्तीसगढ़, पश्चिमी घाट का पूर्वी क्षेत्र, तमिलनाडु आदि
- आर्द्रता - 65-70%
- मुख्य वनस्पति - कुसुम, सेमल, अर्जुन, आँवला, सैण्डलवुड

3. उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनस्पति :-
- क्षेत्र - मध्यप्रदेश, कर्नाटक, पूर्वी राजस्थान
- वर्षा - 100-150 cm. 50 से 100 सेमी. में
- आर्द्रता - 60-65 %
- मुख्य वनस्पति - बेल, शीशम, पलास, अमलतास, सैण्डलवुड

4. कांटेदार वनस्पति :-
- क्षेत्र - पश्चिमी गुजरात, पश्चिमी राजस्थान
- वर्षा - 75 सेमी. से कम (50 से भी)
- आर्द्रता - 40% से कम
- वनस्पति - बेर, खेजड़ी, कैक्टस, बबूल आदि।

चित्र: वनस्पति

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5. पर्वतीय वनस्पति :—

ऊंचाई के आधार पर विभेदित

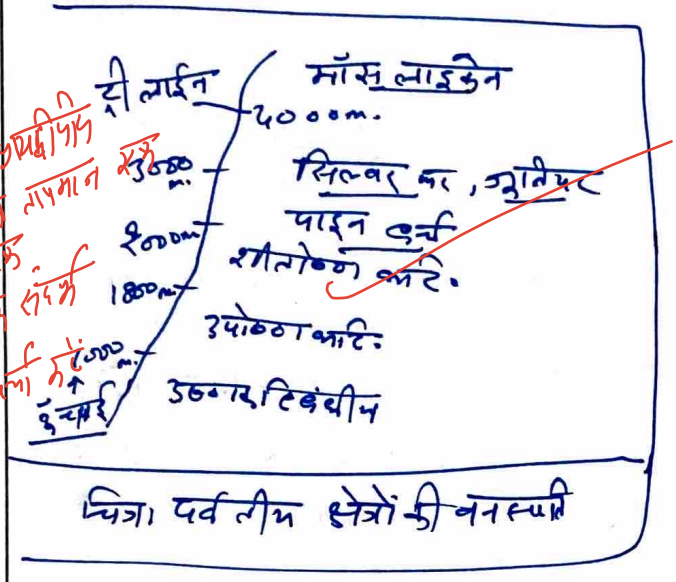

चित्र। पर्वतीय क्षेत्रों की वनस्पति

6. अनूप व वेलांचली वनस्पति :—
- डेल्टाई क्षेत्रों में
- सुन्दरी वृक्ष

प्राकृतिक वनस्पति तापमान, आर्द्रता व वर्षा के आधार पर प्रभावित होती है एवं इसी के आधार पर वनस्पति का क्षेत्रीय वितरण संभव होता है। भारत के लगभग प्रत्येक प्रकार के वन 21.71% भू-भाग पर विस्तृत हैं जिन्हें शीघ्र 33% करने की आवश्यकता है।

4½
15

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5

9

भारत में वर्षा के वितरण में उच्च पर्वत श्रृंखलाओं की स्थिति का प्रभाव सबसे महत्त्वपूर्ण है। व्याख्या कीजिये।

भारतीय उपमहाद्वीप मुख्यत: मानसूनी पवनों से वर्षा प्राप्त करता है जो कि मौसमी परिघटना है। भारत में उत्तर से दक्षिण तक पर्वतों की श्रृंखलाएं एवं पहाड़ियां पायी जाती हैं जिनका प्रभाव वर्षा के वितरण पर पड़ता है।

वर्षा वितरण में पर्वत श्रृंखलाओं की स्थिति का प्रभाव :-

1. हिमालय का प्रभाव :-
- उत्तर में हिमालय शीत पवनों से रक्षा। पश्चिम - पूर्व की ओर लगभग 3000km क्षेत्र में फैला है
- मानसूनी वर्षा को चीन, रूस जाने से रोकता है।
- उ. पूर्व - पटकाई बुम, गारो, खासी, जैन्तिया के सहारे वर्षा
- उत्तर में - हिमालय के सहारे वर्षा

2. पश्चिमी घाट की पहाड़ियां :-
- कलसुबई, हरिश्चन्द्र, महाबलेश्वर

(Examiner's remarks in margin: पर्वतीय वर्षा का एक प्रकार। वर्षा हेतु सर्वाधिक आवश्यक; • भारत के औसत वर्षा 125 सेमी; • 75% वर्षा दक्षिण पश्चिम मानसून से; वर्षा की मात्रा तथा प्रतिरूप के संबंध में चर्चा करें।)

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

आर्द्र पर्वत श्रेणियों के वृष्टि प्रदेश में मानसून से अत्यधिक वर्षा होती है।

भारत के पहाड़ी

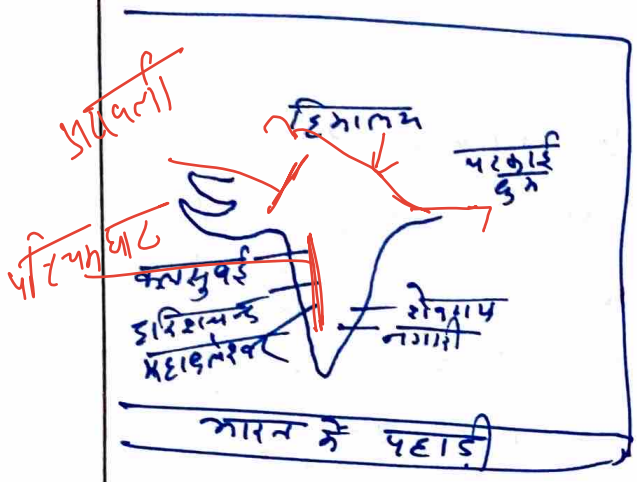

③ पश्चिमी विक्षोभ के कारण होने वाली वर्षा अरावली के क्षेत्र में ही सीमित रह जाती है।

अत: पर्वत श्रृंखलाएं भारत में वर्षा वितरण को प्रभावित करती है किन्तु केवल एकमात्र कारक ही पहाड़ियाँ नहीं है।

विषय वस्तु की समझ बनायें।

3/10

5 (b) प्रायद्वीपीय जल निकासी प्रणाली के विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

प्रायद्वीपीय भारत की नदियां

- गोदावरी, कृष्णा, कावेरी उत्तर भारत की नदियों से प्राचीन है एवं अपनी वृद्धावस्था में है।
- इन नदियों को सारे वर्ष जल की प्राप्ति नहीं होती अतः ये बारहमासी नदियां नहीं है।
- नदियों का प्रवाह अधिकांशतः बंगाल की खाड़ी की ओर है।

उद्विकास :-

भूवैज्ञानिक का अनुमान। महाद्वीप - अरावली मध्य मुख्य जल विभाजक था

- भारत - आस्ट्रेलियन एवं यूरेशियाई प्लेट के टकराने से तृतीयक युग के दौरान उत्तरी भू-भाग का अवतलन हो गया।
- दक्षिणी प्रायद्वीपीय भू-भाग पश्चिम से पूर्व की ओर ढाल वाला बन गया।
- नर्मदा व तापी नदियां विन्ध्य व सतपुड़ा पर्वत के मध्य भ्रंश घाटी में बहती है एवं खम्भात की खाड़ी मे गिरती है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

- लगभग सभी बड़ी नदियां पश्चिम मे उदय होकर पूर्व की ओर बहती हैं एवं डेल्टा का निर्माण करती हैं।

कुछ छोटी नदियां जैसे जुआरी, माण्डवी एश्चुरी का निर्माण करती हैं।

भूगोल की संकल्पनाओं को लेकर चर्चा करें

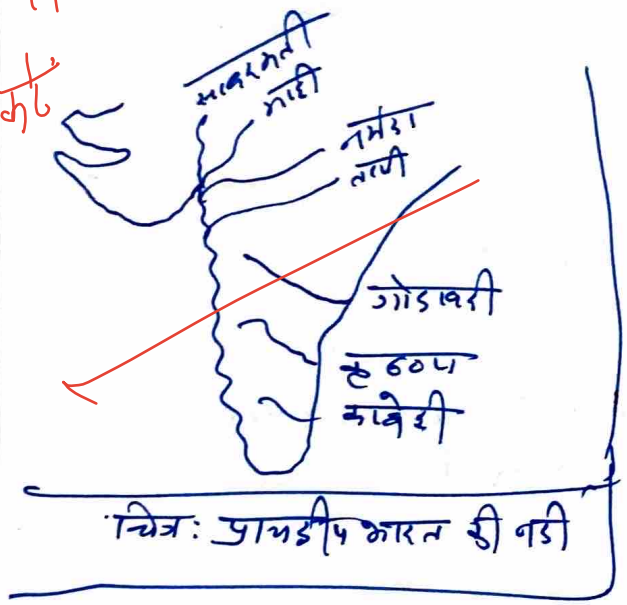

चित्र: प्रायद्वीप भारत की नदी

- पश्चिमी तट मुख्यत: Submerged तट है एवं पूर्वी तट emerging का निर्माण करता है।

प्रायद्वीपीय भारत डेल्टा की नदियां दक्षिण के लिए जल का अत्यधिक आवश्यक स्रोत है जिनमे नदी जोड़ो परियोजना के आधार पर नदियों का जल प्रतिस्थापित किया जा रहा है।

विश्लेषणात्मक और अधिक बनायें

4½/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

(5) (c) पश्चिमी की ओर बहने वाली नदियों की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिये।

परिचय में 2 और बहने वाली नदियों का सामान्य परिचय दें।

भारत की अधिकांश नदियां पूर्वी ओर बहती हैं एवं डेल्टा का निर्माण करती हैं किन्तु कुछ नदियाँ जैसे नर्मदा, ताप्ती पश्चिम की ओर बहती हैं।

प्रमुख विशेषताएं :—

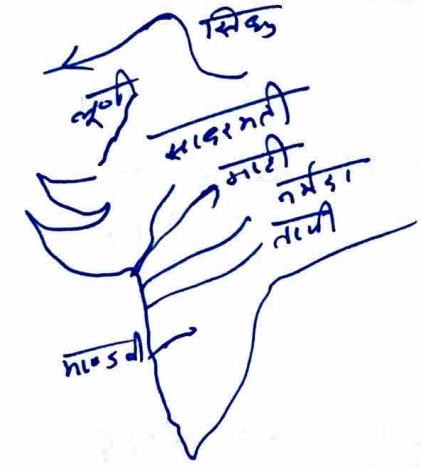

पश्चिमी ओर बहने वाली नदियां

1. नर्मदा नदी अमरकंटक से निकलकर विन्ध्य एवं सतपुड़ा पहाड़ियों के मध्य बहती है एवं खम्भात की खाड़ी में गिरती है।

2. ये नदियां मुख्यतः डेल्टा का निर्माण नहीं करती बल्कि एश्चुरी बनाती है।

3. इनकी लम्बाई पूर्व की ओर बहने वाली नदियों की तुलना में कम होती है — गंगा 2525 km.

4. लूनी नदी गुजरात में कच्छ के रण

में ही समाप्त हो जाती है।

5. सिंधु नदी मानसरोवर के निकट उद्‌गम होकर जम्मू कश्मीर से पाकिस्तान की ओर बहती है। इससे भारत-पाकिस्तान के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध प्रभावित होते हैं (सिंधु जल आयोग)

6. माही नदी वागड़ (डूंगरपुर, बाँसवाड़ा-राजस्थान) की जीवन की आधारशिला मानी जाती है।

7. लूणी नदी के निकट लूणकरणसर, पंचपद्रा, डीडवाना जैसी खारे पानी के झीलें हैं जिनसे नमक प्राप्त किया जाता है।

पश्चिमी छोर की नदियां ना केवल भौगोलिक रूप से बल्कि आर्थिक तौर पर भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

० तीव्र ढाल से उतरने के कारण बहाव अधिक

० कठोर चट्टान से बहने के कारण प्रभाव वाले क्षेत्रों की कम गुंजाइश

० नदियाँ जलप्रपात बनाती हैं।

० जोग या गेरसोप्पा सबसे उच्चतम प्रपात

$3\frac{1}{2}$/10

(Please do not write anything except the question number is this space) कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

(5) (a) विश्वव्यापी चक्रवातों की बड़ी संख्या के साथ, भारतीय उपमहाद्वीप दुनिया के सबसे खराब चक्रवात प्रभावित क्षेत्रों में से एक है, उचित डेटा और जानकारी के साथ इस कथन को उचित ठहराएं।

भारत उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के लिए सुगम उपलब्ध क्षेत्र है। चक्रवातों की बारम्बारता ने भारत को आर्थिक, भौतिक व अवसंरचनात्मक रूप में प्रभावित किया है।

(उष्णकटिबंधीय चक्रवात को परिभाषित करें।)

भारत में चक्रवातों की व्यापक स्थिति :-

- बंगाल की खाड़ी निम्न दबाव के क्षेत्र के साथ चक्रवात उत्पन्न करने के लिए एक बेहद सुगम क्षेत्र है। बंगाल की खाड़ी में प्रतिवर्ष चक्रवातों की बारम्बारता में वृद्धि हो रही है जैसे - 2020 के अम्फान चक्रवात

(प्रति वर्ष बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर में औसतन 5-6 चक्रवात बनते हैं।)

- अरब सागर में आने वाले चक्रवातों की बारम्बारता एक अनुमान के अनुसार 80% तक बढ़ी है। जैसे - हाल के बिपरजॉय चक्रवात ने गुजरात के साथ-साथ

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC
Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

राजस्थान ने भी अपना कहर बरपाया।

- समुद्र के तापमान में पूर्व औद्योगिक स्तर से औसतन 0.7°C की वृद्धि हुई जिसने निम्न दबाव को जन्म दिया है एवं चक्रवात की गहनता में वृद्धि हुई है।

- वैश्विक तापन में वृद्धि ने उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की जन्मस्थली के लिए जगह प्रदान की है।

चित्र : उष्णकटिबंधीय चक्रवात

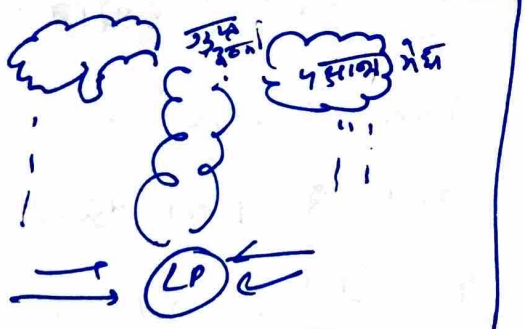

अतः चक्रवातों की बारम्बारता एवं सघनता में वृद्धि ने पुनः वैश्विक तापन को कम करने पर ज़ोर दिया है जो UNFCCC की हर COP समिट में देखने को मिलता है।

आंकड़े सहित विश्लेषण करें।

मॉडल स्पष्ट करें।

निष्कर्ष को (NDC/SDG) कवर करें)

3½ / 10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5

e

कारण बताएं कि परिवर्तनशीलता भारत के मानसून की विशेषता क्यों है।

भारतीय मानसून पवनों का मौसमी व्युत्क्रम है जो सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणायन होने से प्रभावित होता है। मानसूनी वर्षा पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है जिससे अन्ततः भारत की आर्थिक व राजनीतिक नीतियां प्रभावित होती हैं।

मानसून से वर्षा परिवर्तनशीलता :-

- मानसून, ITCZ, निम्न दबाव क्षेत्र, कोरियोलिस बल, पूर्वी जेट स्ट्रीम आदि पर निर्भर करता है।

1. वैश्विक ऊष्मन के कारण ताप में औसतन वृद्धि हुई है जिससे निम्न दाब के अनेक क्षेत्र बने हैं एवं मानसून के कारण वर्षा में परिवर्तन आया है।

(ITCZ का मौसमिक बदलाव की चर्चा करें)

2. आर्कटिक प्रवर्धन के कारण भी मानसून वर्षा में वृद्धि देखने को मिली है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

3. एल नीनो व ला नीनो के क्रमिक चक्र का प्रभाव भारतीय मानसून पर पड़ता है। एक एल-नीना वर्ष के सामान्यत: कमजोर मानसून का अनुभव किया जाता है किन्तु यह हमेशा ही सत्य नहीं होता।

4. क्लाउड सीडिंग के कारण एवं मौसम संशोधन प्रक्रियाओं से मानसूनी वर्षा में संभावित परिवर्तन किया जा रहा है।

5. पश्चिमी जेट स्ट्रीम एवं पूर्वी जेट स्ट्रीम के सम्मिलित प्रभाव से मानसून का जन्म होता है - कोरेरकरम

भारतीय मानसून प्रणाली एक जटिल मौसमी परिघटना है जिसमें कमी या अधिकता का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है।

हिंद महासागर द्विध्रुव का संदर्भ लेकर चर्चा करें)

वर्षा की परिवर्तनशीलता के संदर्भ को सटीक विवरण दीजिए

3/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

उ 7

(a) भारतीय मानसून की प्रणाली और उस पर हिंद महासागर द्विध्रुव के प्रभाव पर चर्चा कीजिये।

भारतीय मानसून प्रणाली

पवनों का मौसमी उत्क्रमण है जो सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणायन होने के फलस्वरूप उत्पन्न होती है।

→ ये सामयिक हवाएं हैं।

मानसून प्रणाली :-

- कोटेश्वरम ने 'उष्णकटिबंध में पूर्वी जेट प्रवाह' पत्र में मानसून को प्रणाली रूप में समझने की कोशिश की।
- मानसून के लिए महत्वपूर्ण प्रभावी कारक निम्न हैं -
  1. ITCZ की उपलब्धता
  2. कोरियोलिस बल
  3. निम्न दाब क्षेत्र
  4. तिब्बत का पठार
  5. हिमालय
  6. पूर्वी जेट स्ट्रीम

मानसून से जुड़े प्रमुख सिद्धान्तों की चर्चा करें।
- पारंपरिक सिद्धान्त
- फ्लोन का सिद्धान्त
- पी. कोटेश्वरम का सिद्धान्त

जब सूर्य उत्तरायण होता है तो अप्रैल के प्रारम्भिक सप्ताह में भारतीय भूमि का ताप बढ़ने लगता है किन्तु पश्चिमी

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

जेट स्ट्रीम के प्रभाव के कारण पवनें ऊपर नहीं उठ पाती एवं मानसूनी वर्षा का अभाव रहता है।

- अप्रैल के अन्तिम सप्ताह से तिब्बत के पठार के पास अत्यधिक न्यून दाब क्षेत्र विकसित होता है। इससे सभी पवनें पूर्वी जेट स्ट्रीम के रूप में उत्पन्न होती हैं। ये पवनें पश्चिमी जेट स्ट्रीम को हिमालय के उत्तर की ओर प्रतिस्थापित करती हैं।
- इस तरह बना हुआ मानसूनी दबाव क्षेत्र निम्न दाब वाला होता है। इस निम्न दबाव को भरने के लिए दक्षिणी पवनें आती हैं जो अरब सागर व बंगाल की खाड़ी क्षेत्रों से प्रवेश करती हैं। ये पवनें भारत में भारी वर्षा कराती हैं।
- बंगाल की खाड़ी शाखा उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा कराती है जो शिवालिक के समानान्तर उत्तरी भाग की ओर पहुँचती है एवं वर्षा कराती है। पश्चिमी भारत तक पहुँचते-पहुँचते इसकी आर्द्रता अतिन्यून हो जाती है अतः यहाँ ये बारिश बहुत कम कराती हैं।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

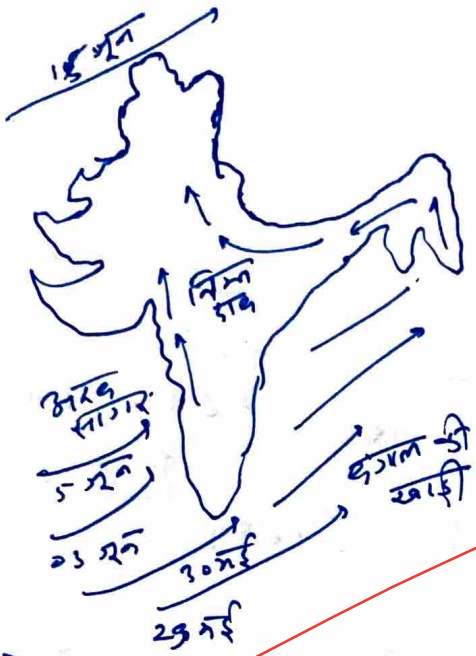

चित्र: मानसून का आगमन

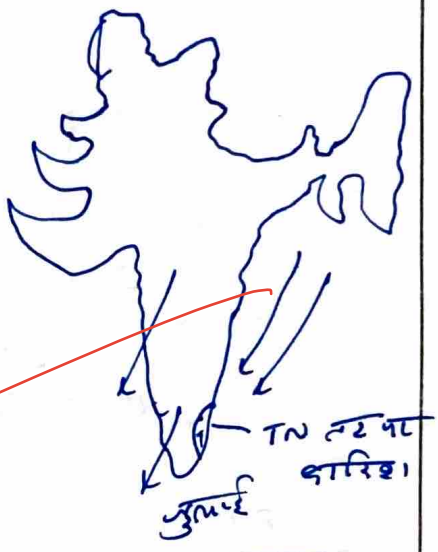

चित्र: लौटता हुआ मानसून

- अरब सागर शाखा पश्चिमी तट के समान्तर होती हुई अत्यधिक वारिश कराती है। इसके वृष्टि छाया क्षेत्र में अति न्यून वारिश होती है। ॐ पश्चिमी भारत तक पहुँचते - पहुँचते इसकी आर्द्रता समाप्त हो जाती है एवं अरवली के पश्चिमी भाग में यह वर्षा नहीं करा पाती जिससे मरुस्थलीकरण का प्रचार हो रहा है।

(Please do not write anything except the question number is this space) कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

हिन्द महासागर द्विध्रुव का प्रभाव :—

चित्र : हिन्द महासागर द्विध्रुव

+ve होने पर — मानसून पर सकारात्मक प्रभाव
— अच्छी वर्षा

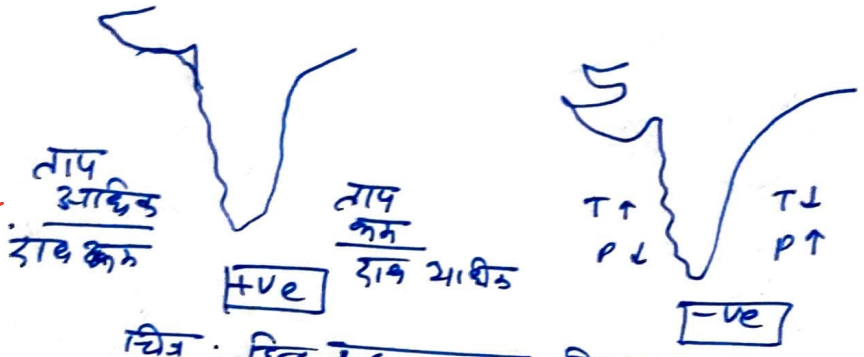

−ve होने पर — मानसून पर नकारात्मक प्रभाव
— वर्षा में कमी

भारतीय मानसून हिन्द महासागर द्विध्रुव, एल नीना - ला नीना, आर्कटिक प्रवर्धन से प्रभावित हो रहा है जिसके प्रभाव कृषि सकेत अर्थव्यवस्था पर भी दृष्टिगोचर हो रहे है।

IOD → तटस्थ चरण
IOD → धनात्मक चरण
की स्पष्ट चर्चा करें।

विस्तार से विश्लेषणात्मक चर्चा करें।

7/20

Page

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

7 (b)

शहरी बाढ़ के कारणों पर चर्चा कीजिये और इसका पशु और मानव स्वास्थ्य के साथ पारिस्थितिकी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

शहरी बाढ़ से आशय शहर मे पानी के स्तर में आने वाले परिवर्तन से है जिससे शहरी अवसंरचना प्रभावित होती है। शहरी बाढ़ प्राकृतिक कम किन्तु मानवीय कृत्य अधिक प्रतीत होता है।

शहरी बाढ़ के कारण :-

1. अत्यधिक कंक्रीटीकरण :-
– शहरी अवसंरचना के निर्माण हेतु (जैसे - सड़क, बिल्डिंग, अस्पताल) आदि कंक्रीट का अत्यधिक प्रयोग जिससे भूमि में निस्यंदन दर कम होना

2. अनियोजित शहरीकरण –
– शहर के बिना ले-आउट प्लान के बसने मलिन बस्तियों के निर्माण से (भारत में 65 मिलियन लोग) बाढ़ की सहनता में वृद्धि हुई है।
उदा० – गुड़गांव

• जल निकासी चैनलों पर अतिक्रमण
• जल वायु परिवर्तन एवं
• अनियोजित पर्यटन गतिविधियां

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

3. वैश्विक क्रम :-

- वैश्विक क्रम से समुद्र तलों के स्तर में वृद्धि हुई है एवं नदियों में जल का स्तर बढ़ा है जिससे शहरों के बाढ़ आ रही है।

4. अप्रभावी ठोस कचरा प्रबंधन तकनीक -

- सिंगल यूज प्लास्टिक का उपभोग
- ठोस कचरे का नदी, नालों में बहाना।
- कचरा प्रबंधन की अवैज्ञानिक तकनीक

पशु, मानव, स्वास्थ्य व पारिस्थितकी पर प्रभाव :-

1) बाढ़ के कारण बीमारियों जैसे - मलेरिया, डेंगू आदि के फैलने की संभावना
2) मानव पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव
3) प्रवास की संभावना
4) आवासंरचना का विनाश
5) पशुओं के लिए चारे की अनुपलब्धता
   - पशुओं की मृत्यु
   - पशुओं में रोगों का प्रसार
   - साफ पेयजल की अनुपलब्धता

6) स्थलीय व जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों का विनाश
जैसे - मछलियों की मृत्यु

7) विदेशज प्रजातियों का आगमन

शहरी बाढ़ शमन के उपाय :-

1. नियोजित शहरीकरण जैसे - स्वच्छ मिशन एवं स्मार्ट शहर परियोजना
2. शहरों को जल स्रोतों से कुछ दूर विस्थापित करना
3. और जल डिस्चार्ज पर ध्यान देना।
4. सतत शहरी विकास प्रक्रिया अपनाना।
5. आपदा न्यूनीकरण प्रबंधन तकनीकें जैसे - G 20 समूह द्वारा ढाँचा तैयार करना।
6. ठोस कचरे का प्रबंधन एवं उचित निस्तारण।
7. नदी जोड़ो परियोजना पर फोकस

शहरी बाढ़ मानव के मनोवैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है जिसे अधिक होने से रोकने की आवश्यकता है जिससे पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ किया जा सके।

विषय वस्तु की समझ बढ़ायें।

6
15

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions In NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

7) c)

सूखा स्थानीय समुदायों के लिये विभिन्न प्रकार की समस्याएँ पैदा कर सकता है, जिसमें पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान भी शामिल है, पारिस्थितिक तंत्र पर सूखे के प्रभाव को समझाएं)

पारिस्थितिक सूखे को परिभाषित करें)

भारत की लगभग 19% भूमि एवं 12% जनसंख्या सूखे से किसी न किसी रूप मे प्रभावित है। सूखे से आशय उस अवस्था से है जब वर्षा की मात्रा 50 सेमी. से भी कम हो जाये। सूखे को 4 प्रमुख भागों मे विभाजित किया जा सकता है -

1. मौसम विज्ञानी सूखा - बारिश की मात्रा मे कमी होना
2. जल विज्ञानी सूखा - जल स्त्रोतों में जल स्तर में कमी
3. कृषि सूखा - कृषि उत्पादकता में कमी
4. पारिस्थितिकी सूखा - पारिस्थितिकी तंत्रों का विनाश होना

सूखे के कारण :-

1. जलवायु परिवर्तन :-

- IPCC की 6th आंकलन रिपोर्ट के अनुसार बाढ़ व सूखे की बारम्बारता मे वृद्धि होगी। इनका प्रभावित क्षेत्र भी धीरे-धीरे बढ़ेगा।

(Please do not write anything except the question number is this space) कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

2. जल स्रोतों का सूखना :-
- जल के गैर संधारणीय उपयोग से जल के पारम्परिक स्रोत धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं - जल निकाय गणना रिपोर्ट।

3. निर्वनीकरण :- वन, आर्द्रता के संरक्षक हैं एवं ये वर्षा की मात्रा में वृद्धि करते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण निर्वनीकरण को प्रोत्साहन मिला है।

4. कृषि भूमि की निम्न उत्पादकता :-
- रसायनों के अत्याधिक उपयोग, एकल फसली खेती आदि के कारण कृषि भूमि की उत्पादकता में परिवर्तन हुआ है।

पारिस्थितकी तंत्र पर सूखे का प्रभाव :-

1. त्रिकाल की संभावना -
पेयजल की कमी + खाद्यान्न की कमी + चारे की कमी

2 प्राथमिक उत्पादन में कमी -
कृषि क्षेत्र एवं वनोत्पाद में कमी के कारण खाद्य सुरक्षा पर संकट

3. ~~समुद्री~~ पारिस्थितकी तंत्र का विनाश -
- मछलियाँ, जलीय जन्तुओं, पेड़-

संक्षेप में पर्याप्त करें

○ जंगल की आग
○ जंगल में वृद्धि
○ कार्बन की परिवर्तन दें
○ जल प्रदूषण निर्धारित

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

पौधों, सी-वीड, एल्गी आदि का विनाश

अल्पसंख्यक प्रजातियों का विलुप्त होना

5. शीर्ष उपभोक्ता पर प्रभाव :-
- खाद्यान्न की कमी के कारण ऊर्जा प्रवाह पर नकारात्मक प्रभाव
- शीर्ष उपभोक्ता - मानव संघर्ष
- शेर, बाघ आदि की मृत्यु

प्रभावों को कम करने के उपाय :-

1. वाटरशेड प्रबंधन एवं जल का संधारणीय उपयोग - IWMP
2. कृषि में न्यून जल आवश्यकता वाली फसलों की पैदावार जैसे - मिलेट
3. नदी जोड़ो परियोजना - केन-बेतवा लिंक परियोजना
4. जल के प्राकृतिक संसाधनों की खोज
5. जोहड़, टांका, तालाब जैसे परम्परागत तरीकों पर जोर

भारत में सूखा व बाढ़ का सम्मिलित प्रभाव देखने को मिलता है। बाढ़ के जल का समुचित प्रयोग कर सूखे से बचा जा सकता है।

विषय वस्तु विस्तार पर ध्यान दें

6/15

Page

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

(8) (9) भारत में नदियों को आपस में जोड़ना एक मुद्दा क्यों है? नदियों के अंतर्संबंध के नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा कीजिये।

हाल ही में भारत के नदी जोड़ो परियोजनाओं पर फोकस किया जाने लगा है जिसमें अधिक जल वाली नदी का जल कम जल क्षेत्रों की ओर ले जाने के लिए नहरों का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है।

भारत के मानचित्र पर परियोजना से संबंधित नदियों का उल्लेख करें

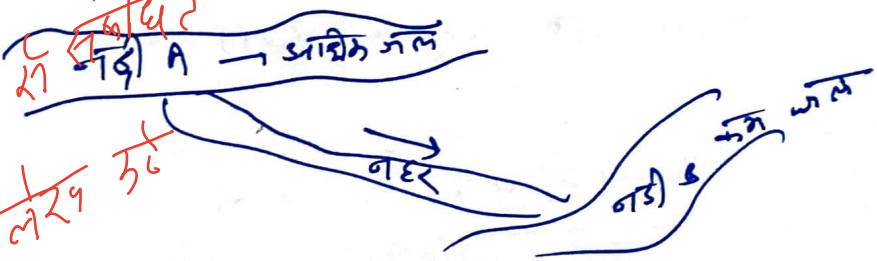

चित्र: नदी जोड़ो परियोजना।

नदी जोड़ो परियोजना एक मुद्दा क्यों?

- नदी का जल चूंकि राज्य सूची का विषय है।

नदियाँ अनेक राज्यों से होकर बहती हैं। केन्द्र सरकार इस तरह के जल को विनियमित करने के लिए नदी जल बोर्ड की स्थापना करती है।

- नदी जल विवाद
- महानदी परियोजना

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

- बढ़ती जनसंख्या के लिए स्वच्छ पेयजल की आवश्यकता
- कृषि क्षेत्र (लगभग 60%) जल का सबसे बड़ा उपभोक्ता
- कुछ क्षेत्रों (जैसे - महाराष्ट्र) में किसानों की आत्महत्या की घटनाएँ
- कोई भी राज्य प्राकृतिक जल पर अपना अधिकार छोड़ना नहीं चाहता
- क्षेत्रीय मुद्दों की राजनीति प्रभावी उदा० महाराष्ट्र व कर्नाटक के विवाद

नदी के अन्तर्सम्बन्ध के नकारात्मक प्रभाव :-

1. प्राकृतिक प्रवाह के विपरीत :-
   - नदियां अपनी प्राकृतिक अवस्था में बह रही हैं उनके तकनीकी तकनीकी द्वारा परिवर्तन करके भविष्य में प्राकृतिक आपदा का माहौल तैयार हो सकता है।
2. पारिस्थितिकी पर प्रभाव -
   - कुछ नदियाँ पारिस्थितिकी रूप से संवेदनशील क्षेत्रों जैसे - राष्ट्रीय पार्क, अभ्यारण्य आदि से गुजरती हैं।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

• चैनल आधारित विकास पर प्रभाव

उदा० केन - बेतवा लिंक में केन नदी पेन्ना टाइगर रिजर्व से प्रवाहित

3. आबादी विस्थापन -
- नहर निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण एवं लोगों का वृहत् पैमाने पर विस्थापन किया जायेगा जो लोगों के आवास अधिकारों के विरुद्ध होगा।

4. अधिक नदी जल अनुपलब्धता वाले क्षेत्रों के साथ अन्याय

5. भूकम्प जैसी आपदा संभावी अवसंरचना का निर्माण

6. नदी जीवों, मछलियों, पेड़ - पौधों आदि के प्राकृतिक आवास को नुकसान

नकारात्मक प्रभावों का विस्तार से चर्चा करें

नदी जोड़ने की सकारात्मकता :-

1) बाढ़ व सूखे की बारम्बारता का निपटान
2) भारत की राष्ट्रीय एकता प्रगाढ़
3) नदी जल का समान वितरण
जैसे - बुन्देलखण्ड क्षेत्र तक जल पहुँचाना
4) कृषि उत्पादकता में वृद्धि एवं क्षेत्र का आर्थिक विकास → रोजगार वृद्धि
5) नदी विवाद तंत्रों के संसाधनों की बचत

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

आगे की राह :—

- दमनगंगा पिंजल, केन-बेतवा जैसी नदी परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने की आवश्यकता
- आम लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना
- जनजागरूकता का प्रसार
- क्षेत्रीय नेताओं का सहयोग
- क्षेत्रीय जनता को बेहतर निर्माण के रोजगार एवं भूमि अधिग्रहण का उचित मूल्य

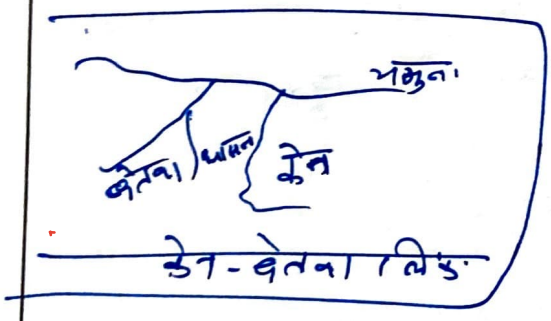

अतः नदी जोड़ो परियोजना भारत के जलीय एकीकरण के लिए अति महत्वपूर्ण परियोजना है जिसे आम जन-जीवन पर प्रभाव को ध्यान में रखकर क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

8
20

8 (b) हिमालय की उत्पत्ति के संबंध में प्रस्तुत विविध परिकल्पनाओं की विवेचना कीजिये और हिमालय को ऊर्ध्वाधिर भागों में विभाजित कीजिये।

हिमालय सीनोजोइक काल में इंडो-आस्ट्रेलियन व यूरोपीयन प्लेट के आपसी टकराव से निर्मित वलित पर्वत है जो पश्चिम से पूर्व लगभग 3000 किमी. तक फैला हुआ है।

हिमालय का उद्भव :-

1. ग्रेट हिमालय का निर्माण क्रिटेशियस काल के अन्त से आरम्भ होकर ओलिगोसीन काल तक हुआ है।
2. मध्य हिमालय की उत्पत्ति मायोसीन अवधि में हुई।
3. शिवालिक की उत्पत्ति प्लीस्टोसीन व होलोसीन अवधि में हुई है।

कोबर की भूसन्नति सिद्धान्त तथा प्लेट विवर्तनिकी सिद्धान्त की विश्लेषण (कोई चर्चा करें)

हिमालय :-

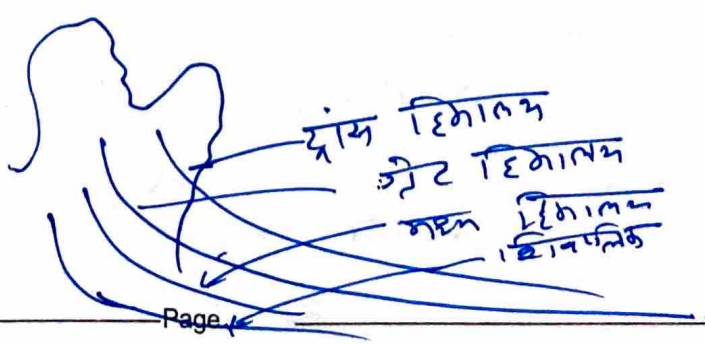

(Is this space) कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

हिमालय की उत्पत्ति :-

- इंडो आस्ट्रेलियन प्लेट एवं यूरेशियाई प्लेट का अभिसरण
- आपसी टक्कर से वलित पर्वत का निर्माण
- हिमालय अभी युवावस्था में
- मुख्यतः अवसादों से निर्मित

हिमालय का ऊर्ध्वाधर विभाजन :-

1. ग्रेट हिमालय / हिमाद्री :-

- औसत ऊँचाई - 7600 मी.
- पर्वत श्रेणी - जास्कर
- मुख्य चोटी -
  ↓
  धौलागिरी, मनसालू, मकालू, कंचनजंघा
- दर्रे - बोमडिला (अरुणाचल), नाथुला, जलेप्ला (सिक्किम)

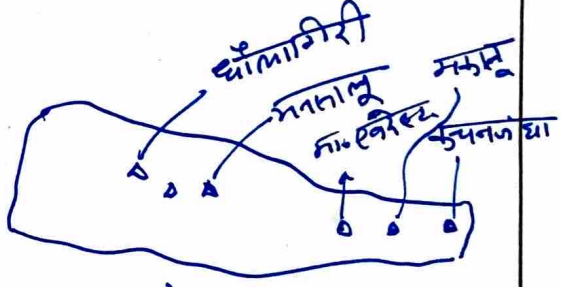

चित्र: नेपाल - ग्रेट हिमालय

2. मध्य हिमालय :-

- औसत ऊँचाई - 3500-4500 मी.
- पर्वत श्रेणी - पीरपंजाल
- मुख्य चोटी -
  धौलधर, नागटिबा, मसूरी, महाभारत
- दर्रे - बनिहाल (जम्मू)

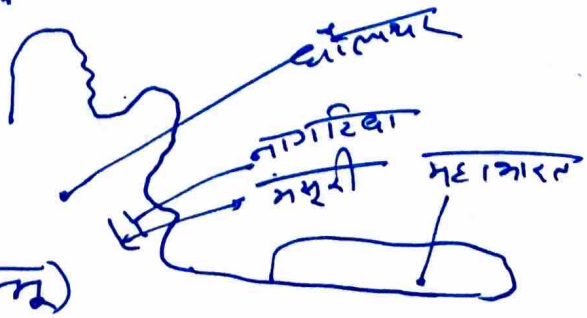

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

③ निम्न हिमालय :-

- औसत ऊँचाई - 600-1200 m.
- शिवालिक हिमालय भी कहते हैं।
- सर्वाधिक नवीन
- हिमालय व गंगा मैदान के मध्य संक्रमण

ट्रांस हिमालय :-

- हिमालय का सबसे प्राचीन भाग
- कैलाश, लद्दाख, जास्कर पर्वत श्रेणी
- हिमालय में कुछ विशिष्ट आधार पर Syntaxial band पाये जाते हैं।
- शिवालिक तुलनात्मक रूप से दक्षिण में अधिक तीव्र ढाल वाला है।

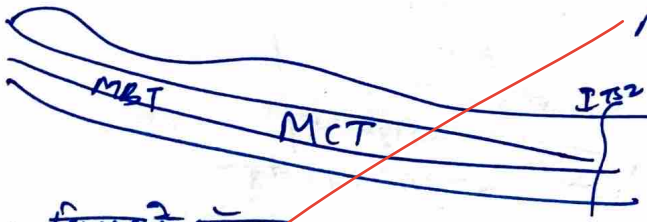

चित्र : हिमालय के थ्रस्ट

हिमालय भारत का एक अतिमहत्वपूर्ण भाग है जो भारत की जलवायु पर प्रभाव डालता है।

विषय वस्तु और समझ बढ़ाएं

5½/15

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

8 (c) भारत के पश्चिमी तटीय मैदान की भौगोलिक संरचना का विवरण दीजिये।

भारत के पश्चिम तट पर गुजरात से तमिलनाडु के कुछ हिस्से तक फैला हुआ है। इसे अनेक भागों में विभाजित किया जा सकता है। — गुजरात तट, (कोंकण) तट, (कन्नड़ तट), मालाबार तट।

काठियावाड़ — [

(i) कोंकण तट —

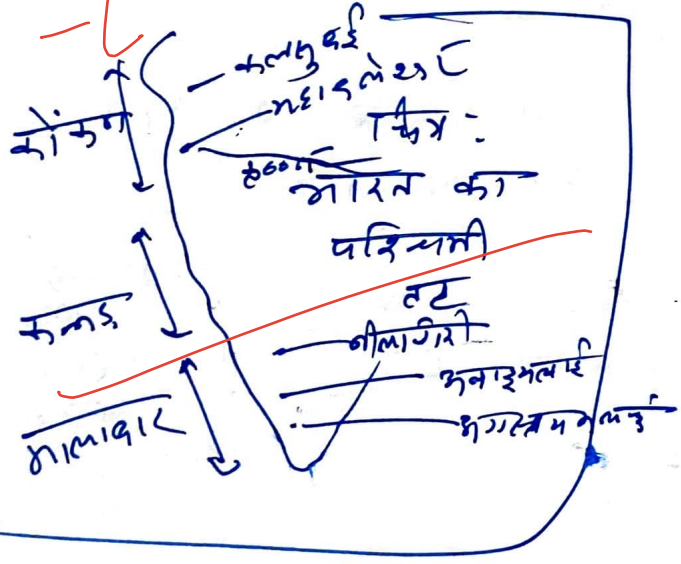

भारत में गुजरात से लेकर महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग तक विस्तृत क्षेत्र — यह उत्तरी सह्याद्री का भाग है।

महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक

काठियावाड़ मैदान को भी यहाँ जोड़ें।

Page

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

- महत्वपूर्ण चोटी—
  अनमुडी, महाबलेश्वर आदि
- मानसूनी वर्षा का प्रभाव
- प्रमुख नदियाँ— नर्मदा व माही खम्भात की खाड़ी में गिरती है।
  गोदावरी व कृष्णा क्रमशः त्र्यम्बकेश्वर, महाबलेश्वर से उद्गम होती है।

② कन्नड़ तट :—

स्थानांतरित चट्टानों प्रतिबिंबित

- गोवा एवं कर्नाटक का क्षेत्र
- मानसूनी वर्षा का प्रभाव
- कर्नाटक से कावेरी नदी
  ↳ माण्डवी निकलकर गोवा में प्रवेश ↳ कालमा वंडुरी प्रोजेक्ट

③ मालाबार तट :—

- केरल का तटीय क्षेत्र
- मानसून सर्वप्रथम इसी हिस्से में
- केरल में वेम्बनाड झील, अष्टमुडी झील

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

- पश्चजल कयालों का निर्माण
- नेहरू वेल्लमकल्ली दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन
- नीलगिरी पहाड़ी - डोडाबेट्टा सबसे ऊँची चोटी
  अगस्त्यमलाई पहाड़ी -
  अन्नामलाई - अनाईमुडी चोटी

अतः पश्चिमी तट उत्तर से दक्षिण तक गुजरात से केरल तट तक फैला है जिसका जलवायवीय प्रभाव पड़ता है। इस क्षेत्र के अत्याधिक नदी उद्गम स्रोत है एवं ऊँची पहाड़ियाँ है।

विषय वस्तु और मानचित्र और उदाहरण

मॉडल उत्तर देखें।

6/15